मान्यताएँ — परिवर्तनशील आनुपातिक नियम इन मान्यताओं पर आधारित है जो इस प्रकार है।

(1) यह मान लिया जाता है कि संगठन, उत्पादन विधि व प्राविधिक ज्ञान में कोई परिवर्तन नहीं होता है

(2) इस नियम का सम्बन्ध उत्पादन की मात्रा से है

(3) यह नियम इस मान्यता पर आधारित है कि उत्पादन साधनों को कम से कम परिवर्तनशील साधनों की छोटी छोटी समान इकाईयों में विभाजित किया जासकता है।

(4) परिवर्तनशील साधनों की सभी इकाईयां एक सी कार्यकुशलता वाली मानी जाती है।

(5) यह नियम उसी समय लागू होगा जबकि एक साधन स्थिर तथा अन्य साधन परिवर्तनशील हो।

नियम के लागू होने के कारण।

उत्पत्ति ह्रास नियम के लागू होने के कारण इस प्रकार है।

(1) स्थिर साधन का अल्प प्रयोग — उत्पादन की प्रारम्भिक अवस्था में उत्पादक के स्थिर साधन का अल्प प्रयोग होता है। इसलिए शुरू की अवस्था में परिवर्तनशील साधन की अतिरिक्त इकाईयों का प्रयोग करने के फलस्वरूप स्थिर साधन का पूर्ण प्रयोग होने लगता है। परिवर्तनशील साधन की अतिरिक्त इकाईयों का प्रयोग करने से प्रक्रिया आधारित पूर्ण विभाजन सम्भव होजाता है इसका परिणाम यह होता है कि कुल उत्पादन में वृद्धि होती है

(2) साधनों की अविभाज्यता — उत्पादन के साधन सीमित होने के साथ साथ अविभाज्य भी होते है। अविभाज्य साधन आदर्शतम बिन्दु तक तो उत्पादन बढ़ाते जाते है लेकिन इस आदर्श बिन्दु के बाद इनका अधिक प्रयोग करने पर उत्पादन में वृद्धि कम होजाती है अगर हम नये साधन लगाते है तो उनकी पूर्ण क्षमता का प्रयोग न होने से लागत बढ़ जाती है और अतिरिक्त ह्रास नियम लागू होजाता है

(3) साधनों की सीमितता — कुछ उत्पादित साधनों की पूर्ति स्थिर अर्थात सीमित होती है। जब सीमित पूर्ति वाले साधन पर दूसरे साधन की प्रयोग की मात्रा बढ़ाई जाती है तब सीमित साधन का परिवर्तनशील साधन से प्रयोग अनुपात बढ़ जाता है जिससे अन्त में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होजाता है।

(4) उत्पादन साधनों का पूर्ण स्थानापन्न न होना — उत्पत्ति के साधनों के प्रतिस्थापन की कुछ सीमा होती है जिससे साधन पूर्ण प्रतिस्थापित नहीं हो पाते है और उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।

Scanned with CamScanner

उत्पत्ति ह्रास नियम का महत्व — इस नियम के बहुत सारे नियम हैं जो इस प्रकार है

(1) यह नियम सर्वव्यापी है — यह बात स्पष्ट होगई है कि उत्पत्ति ह्रास नियम एक सर्वव्यापी नियम है क्योंकि मानवीय क्रिया में प्रत्येक उद्योग में ह्रासमान प्रतिफल की प्रवृत्ति रहती है। एक विद्यार्थी को भी यह अनुभव होता है कि तीन चार घण्टे पढ़ लेने के बाद उसके अध्ययन की गति कम हो जाती है और वह पहले की अपेक्षा कम पढ़ पाता है। तीन चार घण्टे पढ़ने के बाद थकावट का अनुभव करने लगता है और अध्ययन में मन लगाने में उसे कठिनाई होती है। विक्स्टीड के शब्दों में "यह नियम उतना ही सर्वव्यापी है जितना कि स्वयं जीवन का नियम"

(2) माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त का आधार — माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त भी उत्पत्ति ह्रास नियम पर आधारित है जिसमें खाद्य सामग्री की अपेक्षा जनसंख्या अधिक तेजी से बढ़ती है

(3) रिकार्डो का लगान सिद्धान्त का आधार — रिकार्डो का सिद्धान्त भी इस नियम पर आधारित है। विस्तृत खेती में जो बहुत अधिसीमान्त भूमियों को सीमान्त भूमि के ऊपर प्राप्त होता है उसे रिकार्डो ने लगान कहा है किन्तु सीमान्त भूमि को प्रयोग में लाने का कारण उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता ही है।

(4) जनसंख्या का आवास प्रवास — यदि ह्रासमान प्रतिफल नियम कृषि और उद्योग में लागू न होता तो एक ही खेत से और एक ही कारखाने से विश्व के लिए तथा अन्य वस्तुओं का उत्पादन कर लिया जाता और ऐसा होने पर जनसंख्या को एक स्थान या देश से दूसरे स्थान या देश को प्रवास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(5) सीमान्त उत्पादन सिद्धान्त का आधार — सीमान्त उत्पादकता का सिद्धान्त भी इसी नियम पर आधारित है। ह्रासमान प्रतिफल नियम की सहायता से ही उत्पादन के विभिन्न साधनों का न्यायपूर्ण अधिक पुरस्कार निर्धारित किया जाता है।

(6) जीवन स्तर पर प्रभाव — किसी भी देश के लोगों का जीवन स्तर भी क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम के द्वारा प्रभावित होता है उदाहरण के लिए यदि किसी देश की जनसंख्या अन्य साधनों की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ती है तो वहाँ उत्पत्ति ह्रास नियम क्रियाशील होगा और लोगों का जीवनस्तर नीचा हो जायगा।

(7) अविष्कारों के लिए प्रेरणा — बहुत से अविष्कार खोज व अनुसंधान इस नियम की क्रियाशीलता को स्थगित करने के लिए ही किये गये हैं और आज भी मनुष्य नयी खोजों के लिए प्रयत्नशील है।

— X —